रोकिये भारतीय संस्कृति के विध्वंस को

संस्कृति किसी भी देश की विरासत और पहिचान होती है। संस्कृति मानवीय मूल्यों से ओत-प्रोत, आपसी सौहार्द्र, सुन्दर पारिवारिक रिश्तों के साथ-साथ तन और मन को स्वस्थ रखने का भी एक सफल तंत्र है। भारतीय संस्कृति पूरे दुनियां में सर्वश्रेष्ठ मानी जाती है। संस्कृति के कारण ही हमारा देश सोने की चिड़िया, विश्व गुरू आदि के नाम से प्रख्यात है। पूरी दुनियां की कौम इसका अनुसरण करती है। यहाँ की संस्कृति की विशेषता अनेकता में एकता है। भारतीय संस्कृति के बारे में कहा जाता है कि यह देवताओं की संस्कृति है। देवतायें मानवीय और आध्यात्मिक मूल्यों से परिपूर्ण होते है। भारतीय संस्कृति में जाति-पाति, रंग भेद, धर्म भेद आदि का कोई महत्व नहीं रहता है। इसलिए यहाँ प्राचीन काल से ही समस्त समाज के लोगों के जुबान पर 'हिन्दू मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई सब आपस में भाई-भाई' नारा गूंजता रहा है। यहाँ का साम्प्रदायिक सौहार्द्र पूरी दुनियां के सामने मिशाल के रूप में रहा है। हमारे देश में राम, रहीम, कबीर, ईसा, मूसा आदि सबने अपने जीवन से सर्व समाज के सामने इसको जीवंत बनाये रखा है।

भारतीय संस्कृति में मनुष्य के चाल-चलन, रहन-सहन, करूणा, प्रेम, अहिंसा, परोपकार, विश्वबन्धुत्व की मजबूत नींव पर टिका हुआ है। माता-पिता, भाई-बहन, सगे सम्बन्धियों के बीच आपसी अटूट प्रेम का धागा दीवार के रूप में कार्य करता है। संस्कृति का मतलब केवल रहन-सहन और वेशभूषा पर ही निर्भर नही करता है। परन्तु इसके अन्दर मानवीय मूल्य ही इसकी आत्मा है। जो भारतीय संस्कृति को उॅचाईयों पर रखा है। संगठित परिवार, एकता, अखंडता इसकी पहिचान है। पश्चिमी देशों की संस्कृति उन्मुखता को बढ़ावा देती है जो बाहर से देखने में आकर्षक लगती है परन्तु अन्दर से खोखलापन है। मानव का मानव के प्रति प्यार का अभाव होता है। स्वार्थ भावना के कारण अपने लिये करना ही सब कुछ होता है। मर्यादाओं का कोई औचित्य नहीं होता है। पशु और मनुष्य में कोई फर्क नजर नहीं आता।

भारतीय संस्कृति के पुरोधा राम, कृष्ण, रहीम, कबीर और राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी के इस देश की संस्कृति को पश्चिमी देशों की संस्कृति का प्रभाव तार-तार कर रही है। न जाने लोगों को क्या हो गया है। लोग मजहब और धर्मों के छोटी-छोटी बातों में आपस में खून की नदियां बहाँ देते है, बेवजह की बातों पर सड़कों पर उतर आते है। आतंकवाद का खतरनाक राक्षस दिन-ब-दिन बड़ा होता जा रहा है। तोड़-फोड़ की परम्परा हक की लड़ाई मांगने का एक अस्त्र हो गया है। आखिर क्या हो गया विश्व गुरू भारत में रहने वाले लोगों को। इंसानियत रसातल में चली जा रही है। मानवीय रिश्तों की बात तो बीते जमाने की हो गयी है। लोग इंसानियत छोड़ रावण, दुर्योधन और कंस जैसे कृत्य कर रहे है। फैशन परस्ती, अश्लीलता और व्यभिचार को ही मूल संस्कृति माना जा रहा है। परम्परागत संस्कृति में रहने वाले लोगों को समाज में पिछड़ा माना जा रहा है। भाई-बहन, माता-पिता, पिता-पुत्र, पुत्र और माँ के रिश्ते तार-तार हो रहे है। भौतिक सुखों को पाने की लालसा में मृगतृष्णा के समान लोग सुख रूपी कस्तूरी के लिए आंखे मूंद मानवीय रिश्तों को रौंद रहे हैं। आखिर यह कौन सा समय और किस स्थिति का संकेत है। विकसित भारत क्या केवल आधुनिक संसाधनों पर ही निर्भर है? जितना हम विकास के लिए तन-मन और धन का इस्तेमाल कर रहे है। उससे ज्यादा भौतिकता की दौड़ से उपजे समस्याओं के समाधान के लिए खर्च किये जा रहे है। आखिर कैसे होगा भारत और भारत में रहने वाले लोगों का सम्पूर्ण और सर्वांगिण विकास।

पूरे विश्व में आसुरी प्रवृत्तियों के बोलबाला से पूरा संसार विकारों में जल रहा है। आखिर इस अग्नि को कौन सा अग्निशमन बुझायेगा, कौन सा शीतल रसायन मानवीय संवेदनाओं को जोड़ेगा, कौन सा तंत्र लोगों के अन्दर सद्भाव पैदा करेगा, यह सब सोचने का गम्भीर विषय है। धर्म, अध्यात्म और समाज को जोड़ने का दावा करने वाली संस्थाओं में भी पद, पैसा का जहर घुल चुका है। आखिर कौन सी ऐसी व्यवस्था आयेगी जिससे सारे जग में एक सम व्यवहार, शान्ति और सद्भाव होगा। पहले के समय में मनुष्य और स्त्रियों के रहन-सहन, वेशभूषा लोगों को सादगी और उच्च विचार के लिए प्रेरित करने वाला होता था। परन्तु आज विकसित होने के नाम पर लोगों का रहन-सहन और वेशभूषा मादकता और अश्लीलता को बढ़ावा दे रहा है। जिससे समाज में तमाम समस्यायें उत्पन्न हो रही है। जिसका उत्तर आज के समय में ढूढ़ना आवश्यक है।

भारतीय संस्कृति के क्षरण के कारण ही इतने सारे सवाल और समस्यायें आ रही है। क्योंकि यदि भारतीय संस्कृति के अनुरूप मनुष्य चले तो इन सभी सवालों का जबाब उसमें निहित है। मनुष्य को इस बात पर गहराई सोचने की आवश्यकता है कि जब हमारे देश में सोने की चिड़िया का माहौल था तब वहाँ पर भारतीय संस्कृति ही विद्यमान थी। लोगों के अन्दर दैवी गुण, वसुधैव कुटुम्बकम, आत्मीय भाव था जिससे वहाँ किसी प्रकार की हिंसा और अत्याचार के लिए स्थान नहीं था। धीरे-धीरे भारतीय संस्कृति से लोग विमुख होते गये, वैसे-वैसे कुरीतियां और सामाजिक बुराईयां अपना पैर जमाने लगी। संस्कृतिक मूल्यों से सजे लोग सदाचारी और सुखी थे। परन्तु बदलते समय में भारतीय संस्कृति को पीछे छोड़ने के कारण आत्मबल घटता गया और आसुरी बुराईयां अपना सम्राज्य स्थापित करती गयी। आज नौबत ऐसी आ गयी कि भारतीय संस्कृति विध्वंस के कगार पर है। उसका नतीजा पूरे संसार में अश्लीलता, अत्याचार, भ्रष्ट्राचार, हिंसा तेजी से पूरे समाज को निगलती जा रही है। हजारों, लाखों दुर्योधन, रावण, कंस जैसे राक्षस बढ़ते जा रहे है। जो लोग आसुरी प्रवृत्ति के कारण दबंगयी करते है वैसे लोग ही उनका साथ देकर उन्हें बड़े बनने की पदवी दे रहे हैं।

आखिर वह दिन जरुर आयेगा जब चारो तरफ मानवता का परचम फहरेगा, लोग मूल्यों से परिपूर्ण होंगे, सदभावना, प्रेम, अहिंसा होगी। क्योंकि अंधकार के बाद प्रकाश और रात के बाद दिन का आना स्वाभाविक है। इसलिए परमात्म का शरण ही मात्र एक रास्ता है जिससे मिलने वाली शक्ति, शांति को अपनाने से पूरे विश्व में शान्ति और अहिंसा का राज्य स्थापित होगा, लोग एक आकाश के नीचे स्वतंत्र और प्यार से रह सकेंगे। इसके लिए परमात्म प्रदत्त मार्ग पर चलना होगा। ऐसा नहीं है कि भौतिकता का उपयोग न किया जाये। बेशक भौतिकता का उपयोग किया जाये परन्तु उसके अधीन न हो। इसके लिए अपने को मूल स्वरूप को जानकर राजयोग के माध्यम से परमात्मा के साथ बुद्धियोग जोड़ना होगा। तभी भारतीय संस्कृति की पुनर्स्थापना होगी और भारत पुन: सोने की चिड़िया बनेगा।

- ब्रह्माकुमारीज् वार्ता फिचर्स
www.bkvarta.com